ओ३म्

# नया वर्ष कब ?

लेखक

**उदयनाचार्यः**

संस्थापक, अध्यक्ष
निगमनीडम् - वेदगुरुकुलम्
(०९४४०७२१९५८)

प्रकाशक
**वेदधर्म-प्रचार-समिति**
निगमनीडम् - वेदगुरुकुलम्
महर्षि दयानन्द मार्ग
ग्रा० पिडिचेड, मं० गज्वेल
जि०मेदक (तेलंगाणा)५०२२७८

प्रथम संस्करण
फाल्गुन २०७२
०१.०३.२०१५

मूल्य
15/-

नया वर्ष कब ?

Naya Varsh Kab ?

**प्रतियाँ** :1000

प्राप्ति स्थानः-

१. निगम-नीडम् (वेदगुरुकुलम्), महर्षि दयानन्द मार्ग , पिडिचेड, गज्वेल, मेदक - 502278 (तेलंगाणा)।
nigamaneedam@gmail.com

२. विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द, ४४०८, नई सड़क दिल्ली- ११०००६

३. आर्य समाज, सीताफल मण्डी, सिकिन्द्राबाद - 500061

४. मुरली ब्रह्मचारी, आर्य निलयम्, 9–2–586, जूलम्मा मन्दिर के सामने, रेजिमेन्टल बाजार, सिकिन्द्राबाद -25 (09441033702)

५. पतञ्जलि आयुर्वेद आरोग्य केन्द्रम्, श्रीराम कालोनी, पुराना बान्सुवाडा रोड, बान्सुवाडा - 503187 (09494026684)

६. श्री गोपाल बुक हौस, 3–3–860, सुल्तान बाजार आर्य समाज के सामने, काचिगूड़ा, हैदराबाद -27 (040–24658101)

अक्षर संयोजक & मुखपृष्ठ का चित्रीकरण (डी.टी.पी)
**ब्रह्मचारी वेदमित्र चैतन्य, ब्रह्मचारी धर्मेन्द्र चैतन्य**
निगमनीडम्-वेदगुरुकुलम्, पिडिचेड, गज्वेल, मेदक

मुद्रण : विक्रान्त प्रिंट हाउज, 12-11-735, वारसिगूड X रोड़, सिकिन्द्राबाद-500061. फोन नं. 9705085608

# नया वर्ष कब ?

जनवरी –१ का आगमन होते ही छोटे-बड़े, प्रबुद्ध-सामान्य, स्त्री-पुरुष आदि सभी हर्ष-उल्लास के साथ नये वर्ष के स्वागत की तैयारी करते हैं। नये वर्ष की शुभकामनाओं को ज्ञापित करने हेतु चारों ओर बैनर, बोर्ड आदि लगाये जाते हैं। रंगोली, रंगबिरंग के लाईट, फूल-माला आदियों से अलंकरण किये जाते हैं। रात भर जाग कर पुराने वर्ष का अन्तिम क्षण बीतकर नये वर्ष का आदि क्षण उपस्थित होते ही आबालवृद्ध सभी जन नाच गान, आतिशबाजी, बैण्ड-बाजा आदि ध्वनियों से सभी दिशाओं को गूँजायमान करते हुए नये वर्ष का बड़ा स्वागत करते हैं और अपरिमित आनन्द का अनुभव करते हैं।

हे भारत माता के मानस वीर सपूतों! क्या यह जनवरी-१ नये वर्ष का आरम्भ है? क्या इसी दिन नये वर्ष का आरम्भ होता है? एक बार गम्भीरता से अपनी अन्तरात्मा में विचार करना। इस समय प्रचलित कालेन्द्र (कालेन्दर–कैलेन्डर) = कालान्तर ईसा से सम्बन्धित है, यह सर्वविदित है। क्या ईसा से पूर्व अपने भारतदेश का चरित्र, परम्परा, संस्कृति नहीं थी? यदि थी तो ईसा से पूर्व के लोग किस दिन नये वर्ष को मनाते रहे होंगे? यह विचार करना होगा, आत्ममन्थन करना होगा। हम यहाँ केवल प्रमुख विषयों के साथ दिग्दर्शन करा रहे हैं। सुधी पाठक वृन्द स्वयं विचार कर निर्णय लें और तथ्य (सत्य) को सबके सामने प्रस्तुत करें।

यूरोप देशों में पहले ओलम्पियन संवत्सर प्रचलित था। वही संवत्सर ईसा से ७५३ वर्ष पूर्व रोंमनों का राज्य स्थापित होने के पश्चात् रोमनों के प्रथम राजा रोमलुस् के काल में रोमन संवत्सर के रूप में परिवर्तित हो गया। तब उस संवत्सर में केवल दस मास (मार्च से दिसम्बर तक) और



३०४ दिन ही थे उन मासों के नाम रोंमन देवताओं और महाराजाओं के नाम से रखे गये थे। जैसे कि 'मार्स' इस रोमन युद्ध देवता के नाम से 'मार्च' मास, अट्लस देवता की कुमारियाँ ''मलिका मई और मलिका जौन'' के नामों से क्रमशः 'मई', 'जून' मासों के नाम रखे गये। रोमन सम्राट् 'जूलियस सीजर' एवं उनके पौत्र 'आगस्टस सीजर' के नामों से 'जुलाई'और 'अगस्त' मास प्रचलित किये गये। इस प्रकार प्रथम मास मार्च से छटे मास अगस्त तक के मासों का नामकरण सम्पन्न हुआ। उनके पश्चात् के मास क्रम- बोधक शब्दों से प्रसिद्ध किये गये। जैसे कि सप्तम (सातवाँ) मास का नाम सेप्टम्बर (September), अष्टम (आठवां) मास का नाम अक्टोबर (October), नवम (नौवाँ) मास का नाम नवम्बर (November), दशम (दसवाँ) मास का नाम दिसम्बर (December) रखा गया। यहाँ यह ध्यातव्य है कि सेप्टम्बर आदि शब्द सप्तमादि संस्कृत शब्दों के विकृत रूप हैं। सप्तम अम्बर(=सातवाँ आकाश) से सेप्टम्बर बना,वैसे ही अष्टम अम्बर (=आठवाँ आकाश) से अक्टोबर, नवम अम्बर (=नौवाँ आकाश) से नवम्बर और दशम अम्बर से दिसम्बर (दशम्बर) शब्द बना। सप्तमाम्बर आदि शब्द आकाशस्थ नक्षत्रादियों की विशेष अवस्थाओं के बोधक हैं।

ये मार्च आदि दस मास ही ५३ वर्षों तक व्यवहृत होते रहे। ईसा से ७०० वर्ष पूर्व रोमनों का द्वितीय राजा ''नूमा पोम्पिलियस (Numa Pompilius)'' ने 'जोनस' नामक रोमन देवता के नाम से जनवरी (January) मास आरम्भ किया, साथ में फिब्रवरी (February) मास को भी आरम्भ किया, जिसका अर्थ है 'प्रायश्चित्त मास'। पांचवाँ रोमन सम्राट् 'एत्रुस्कान् ताक्किनियूस् प्रिस्कियूस्'(Etruscan Tarquinius Priscius, 616-579 ईसा पूर्व) ने रोमन रिपब्लिकन् कैलेण्डर मुद्रित किया था, जिसमें जनवरी को प्रथम स्थान दिया गया था। इन दो मासों को दसवें मास दिसम्बर के बाद जोड़ा जाता तो बुद्धिमत्ता का परिचायक होता। परन्तु इन्हे आदि में जोड़ने से सातवाँ मास सेप्टम्बर नौवाँ मास हो गया, वैसे ही आठवाँ

मास ओक्टोबर दसवाँ, नौवाँ मास नवम्बर ग्यारहवाँ एवं दसवाँ मास दिसम्बर बारहवाँ मास हो गया। जिससे सेप्टम्बर (सप्तम अम्बर=सातवाँ आकाश) आदियों का अर्थ निरर्थक सिद्ध हुए। अंग्रेजी में 'मार्च' का अर्थ है– 'गमन-आगमन' अर्थात् पुराना संवत्सर व्यतीत होकर नया संवत्सर आ गया है। यह अर्थ भी जनवरी, फरवरी मासों को आदि में जोड़ने से व्यर्थ हो गया। अज्ञानता एवं अविवेकता के लिए यह एक ज्वलन्त उदाहरण है। साथ में यहाँ यह भी विचार करना होगा कि फरवरी मास में २८ या २९ही दिन क्यों? काल गणना में यदि कहीं कम-ज्यादा हो जाता है तो, न्यूनता रह जाती है तो उसकी पूर्ति अन्त में की जानी चाहिए, फरवरी मास यदि अन्त में रहता तो संवत्सर भर की न्यूनता को पूर्ण करने के लिए २८ या २९ दिन रखे गये हैं, ऐसा समझ में आता और फरवरी का अर्थ (प्रायश्चित्त) भी सार्थक होता। पर संवत्सर के बीच में अर्थात् दूसरे मास में न्यूनता की पूर्ति (Adjustment) करना कहाँ की बुद्धिमत्ता है? इससे स्पष्ट है कि जनवरी एवं फरवरी दोनों मास दिसम्बर के बाद ही जोड़ने योग्य हैं, न कि मार्च के आदि में।

भारतीय प्राचीन परम्परा के अनुसार नया संवत्सर चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को आरम्भ होता है। जो कि मार्च के अन्त में या अप्रैल के आदि में आता रहता है। इससे ज्ञात होता है कि मार्च-२५ से वर्ष को आरम्भ करने की रोमन परम्परा एवं भारतीय परम्परा में अत्यन्त समानता है। मार्च से संवत्सर को आरम्भ करना भारतीय संस्कृति का अनुकरण होता है। अतः अपने क्रैस्तव सम्प्रदाय को वैदिक संस्कृति से अलग करने के दुरुद्देश्य से रोमन सम्राट् नूमा पोम्पिलियस् ने जनवरी और फरवरी मासों को मार्च से पूर्व जोड़ा है, इसके अतिरिक्त अन्य कोई समुचित कारण नहीं है। उससे रोमन संवत्सर ३०४ दिन के स्थान पर (३०४+३१+२८=) ३६३ दिन में रूपान्तरित हो गया। इनमें कुछ मास ३० दिन, कुछ ३१ दिन तथा फरवरी मास २८या २९ दिन के रूप में विभक्त हैं। जूलियस् सीजर और आगस्टस्



सीजर के नामों वाले जुलाई एवं अगस्त मासों को क्रमशः ३१-३१ दिन के रूप विभक्त किये गये। इस प्रकार यहां यह स्पष्ट हो जाता है कि संवत्सर का आद्य दिन, मासों का विभाग, परिमाण, नाम एवं क्रम ये सब स्वार्थवश वा अन्य दुरुद्देश्य के कारण अपने मतोन्माद से समाज पर बलात् थोपे गये हैं।

रोमन कैलैण्डर के बारह महिनों के नाम व परिमाण इस प्रकार थे-

| | | |
|---|---|---|
| Januarius (31) | Maius (31) | September (30) |
| Februarius (28/29) | Junius (30) | October (31) |
| Martius (31) | Quinctilis (31) | November (30) |
| Aprilis (30) | Sextilis (30) | December (30) |

ईसा से ४४ वर्ष पूर्व जूलियस् सीजर् (Julius Caesar) के सम्मान में Quinctilis मास के नाम को Julius (July) के रूप में परिवर्तित किया गया। ईसा से ८ वर्ष पूर्व सम्राट् अगस्टस् सीजर ने स्वयं ही Sexitilis मास के नाम को अपने नाम से अर्थात् Augustus (August) नाम से प्रसिद्ध कर दिया। पहले Sextilis मास में तीस ही दिन थे, पर अपने नामवाला मास जूलियस् सीजर के नाम से प्रसिद्ध मास Julius (July) के समान रहना चाहिए, ऐसा विचार कर तीस दिन के बदले में August को एकत्तीस दिन का बना दिया। इस एक दिन के आधिक्य को फिब्रवरी मास में एक दिन घटाकर २९ दिन के बदले में २८ दिन कर दिया इस कैलेण्डर के कुछ दोषों को दूर कर 'पोप ग्रेगरी' ने एक विनूतन कैलेण्डर को प्रकाशित किया। यही कैलेण्डर सन् १५८२ से कुछ प्रमुख देशों में अपनाया गया। यह ग्रेगारियन् कैलेण्डर किस-किस देश में कब-कब अपनाया गया था, इसका स्पष्टीकरण निम्नप्रकार –

| संवत्सर (ईस्वी सन्) | देशों के नाम |
|---|---|
| १५८२ | – फ्रान्स, इटली, लक्सेम्बर्ग, पुर्तगाल, स्पेन । |
| १५८३-१८१२ | – स्विट्ज़र्लैण्ड । |
| १५८४ | – जर्मन (रोमन कैथोलिक), बेल्जियम और नेदर्लैण्ड के कुछ प्रान्तों में |
| १५८७ | – हांगरी । |
| १६९९-१७०० | – डेन्मार्क, डच्, जर्मन प्रोटेस्टण्ट । |
| १७७६ | – जर्मनी । |
| १७५२ | – ब्रिटेन, अमेरिका । |
| १७५३ | – स्वेड़ेन |
| १८७३,१८७५ | – जापान, मिस्र |
| १९१२-१९१७ | – अल्बानिया, बुल्गारिया, चीन, एस्तोनिया, लातविया, लिथुआनिया, रोमानिया, तुर्कि, युगोस्लाविया |
| १९१८,१९२३ | – सोवियत रूस, ग्रीस |

भूगोल और खगोल के विज्ञान से, प्राकृतिक घटनाओं से, सूर्य-चन्द्र-ग्रह-नक्षत्रों की स्थितियों से ग्रेगारियन कैलेण्डर के मासों के साथ कोई सम्बन्ध नहीं दीखता । इसलिए जनवरी और फरवरी मासों को मार्च से पूर्व जोड़ने पर भी जनवरी–१ को संवत्सरादि के रूप में लोगों ने नहीं स्वीकारा। मार्च–२५ को ही संवत्सरादि अर्थात् नये वर्ष के रूप में मानते हुए आये हैं। सन् १५८२ से जनवरी– १ नये वर्ष के रूप में व्यवहार में आया, उससे पूर्व नहीं ।

जनवरी –१ को नये वर्ष के रूप में मनाने की पद्धति को अंग्रेजियों ने भारत में भी सन् १७५२ में आरम्भ करवाया । भारतीय परम्परा को नष्ट करने के लिए बहुत से षड्यन्त्र करने पर भी वित्तसंवत्सर (Financial Year) और शिक्षा संवत्सर (Educational Year) आज तक अप्रैल–१ से ही आरम्भ होते हैं । इन्हे बदल नहीं पाये। ये दोनों ही संवत्सर भारतीय नये संवत्सर के अनुकूल हैं, साथ में वैज्ञानिक और बुद्धिसंगत हैं। पर अप्रैल-१ को मूर्खदिवस (Foolish day) के रूप में प्रचलन कराया गया । इसका कारण यह है कि – सन् १५८२ में फ्रांस के दसवाँ राजा 'चार्ल्स' ने अपने देश में जनवरी–१ को संवत्सरादि के रूप में घोषणा की, पर वहाँ की जनता राजाज्ञा को स्वीकार न कर अप्रैल–१ को ही नया संवत्सर मनाती रही। इससे क्रुद्ध चार्ल्स ने राजाज्ञा का उल्लंघन करने वाले सभी को मूर्ख घोषित किया । उसके बाद धीरे-धीरे वहाँ की जनता को जनवरी–१ को ही संवत्सरादि के रूप में मानना पड़ा । इस सफलता को देखकर, पुनः भविष्य में कोई भी अप्रैल–१ को नया वर्ष न मनावें, इस उद्देश्य से चार्ल्स ने अप्रैल–१ को मूर्खदिवस के रूप में घोषणा करवाई । हम भारतीय इस सच्चाई को न जानते हुए जन्मान्धों के समान भेड़ चाल से उनका अनुकरण करते जा रहे हैं और विना किसी राजाज्ञा के ही खुशी से, आनन्द से एक दूसरे को अप्रैल–फूल (मूर्ख) बनाते जा रहे हैं । ऐसा दृष्टान्त संसार में अन्यत्र कहीं नहीं मिलेगा । प्रत्येक मनुष्य व समाज अपने-आप को बुद्धिमान्, मेधावी तथा महान् मानता है, मूर्ख व हीन नहीं । एक दूसरे को परस्पर ज्ञानादि का आदान-प्रदान करना ही उत्तम समाज का लक्षण है । पर परस्पर मूर्ख कहना बुद्धिमानों का व्यवहार नहीं है । अतः इस प्रकार की बुद्धिहीनता के व्यवहारों को त्यागकर अप्रैल–१ के बदले में जनवरी-१ को Foolish day के रूप में मनाकर अपनी बुद्धिमत्ता का परिचय दें ।



जनवरी–१ की आधी रात को शीत अपने चरम सीमा पर रहती है । सर्वत्र उसका ही प्रकोप दिखाई देता है । पौधे, वृक्ष, वनस्पति, लता-गुल्म आदि सभी रसहीन होकर मुरझे जाते हैं । फूलों का विकास कहीं भी नहीं दीखता । पशु-पक्षियों को तो शीत मृत्यु सदृश दिखाई देती है । ऐसे विशादकर, दुःखमय समय में नया वर्ष मनाना क्या उचित है? सुधी पाठक

विचार करें ।

दिन का प्रारम्भ आधी रात को नहीं, अपितु सूर्योदय से ३ घण्टे पूर्व (3 A.M.) होता है । उसी समय पशु-पक्षी आदि जागकर अपने-अपने मधुर ध्वनियों से सभी दिशाओं को मनोहर एवं श्रव्य बनाते हैं । वह दृश्य अवर्णनीय होता है । उसी समय ऋषि, मुनि, योगी आदि भी जागकर ध्यान- मग्न हो जाते हैं, ब्रह्म में लीन हो जाते हैं । इसलिए उस समय को ब्रह्ममुहूर्त कहते हैं । किसान भी उसी समय निद्रा को त्यागकर खेती के कार्यों में लग जाते हैं । उसी समय सम्पूर्ण संसार में सक्रियता, क्रियाशीलता दिखाई देती है । रात को मुरझे हुए पत्ते और फूलों में भी उसी समय विकास आरम्भ होता है । प्राणियों के शरीरों में भी उसी समय एक विशिष्ट चैतन्य का संचार होता है । मनुष्यों के शरीरों में भी सक्रियता, रक्त का संचार, हृदय की गति बढ़ती है । इसलिए हृदय के रोगियों को प्रायः इसी समय हृदयाघात होता है । हम सुनते आये हैं और आयुर्वेदादि शास्त्र भी कहते हैं कि सभी मनुष्यों को इसी ब्रह्ममुहूर्त में जागना चाहिए । क्योंकि इस दिव्य मुहूर्त में सोने वाले की आयु, शक्ति और बुद्धि क्षीण हो जाती है एवं आलसी पन बढ़ जाता है। इस प्रकार यह जड़ जगत्, पशु-पक्षी, मनुष्यों का अनुभव एवं शास्त्र यह प्रकट कर रहें कि ब्रह्ममुहूर्त से दिन आरम्भ होता है । पर इसके विपरीत आधी रात को दिन का आरम्भ वा संवत्सर का आरम्भ मानना क्या अज्ञानता का प्रतीक नहीं है? मेधा सम्पन्न भारतीयों को पाश्चात्य सभ्यता का अन्धानुकरण कर पशु-पक्षियों से हीन अज्ञानियों के जैसा व्यवहार करना शोभा नहीं देता । अग्नि व दीपकों को प्रज्वलित कर प्रकाश से प्रसन्न होकर अलौकिक आनन्दानुभूति करने की संस्कृति है हमारी । पर दीपकों को बुझाकर अन्धकार से प्रीति करने की सभ्यता है पाश्चात्यों की। चारों ओर घनघोर अन्धकार से आच्छादित आधी रात को मनुष्य ही नहीं, अपितु पशु-पक्षी आदि भी गहरी नींद में रहते हैं । कहीं भी चेतनता, क्रियाशीलता नहीं दीखती । ऐसे समय में वर्ष व दिन का आरम्भ मानना



अज्ञान एवं अविवेकता है, विज्ञान के विरुद्ध है । एक सूर्योदय (ब्रह्ममुहूर्त) से दूसरे सूर्योदय के बीच के समय को ज्योतिष शास्त्र में सावन दिन कहते हैं । मध्यरात्रि से दिन आरम्भ होने का वर्णन किसी भी शास्त्र में नहीं है। अतः भारतमाता के हे वीर सपूतों! जागो, सचेत हो जाओ, विचार करो ।

# यथार्थ नूतनसंवत्सर

अभी तक यह स्पष्ट किया गया है कि– जनवरी-१ किसी भी परिस्थिति में संवत्सर का पहला दिन नहीं हो सकता । पुनः नया वर्ष कब प्रारम्भ होता है? इस प्रश्न के समाधान को जानने से पूर्व कुछ अन्य प्रश्नों पर विचार करते हैं । दिन वा सूर्योदय सदा नये-नये ही आते हैं, कभी भी पुराने नहीं आते । कल का सूर्योदय आज के सूर्योदय से भिन्न ही था और आज का सूर्योदय भविष्य में पुनः कभी नहीं आयेगा । प्रत्येक सूर्योदय भूतभविष्य से अतीत नव-नूतन ही उदित होते हैं । जब प्रतिदिन या प्रत्येक सूर्योदय नया है, तो पुनः 'नया वर्ष' का अर्थ क्या है? वर्षभर में एक ही दिन नया आता है, शेष सब पुराने आते हैं, ऐसा अर्थ तो हो नहीं सकता। संवत्सर के प्रत्येक दिन या सूर्योदय को पुराना समझने वाला व्यक्ति एक दिन या सूर्योदय को नया कैसे समझ सकता है? इस प्रकार के प्रश्न करने वाले लोगों का अभाव नहीं है । इन प्रश्न कर्ताओं से यदि यह पूछा जाय कि आपका जन्म दिन क्या है? तो वह वर्ष के किसी एक दिन को अपना जन्म दिन बताएगा । अर्थात् वह दिन उस व्यक्ति का पहला दिन है, उसी दिन वह नये वर्ष में प्रवेश करेगा । वह उसका नया वर्ष है, उसकी अवस्था (आयु) में एक नई संख्या जुड़ जायेगी । उसी प्रकार नया वर्ष का अर्थ है सृष्टि का जन्मदिन, उसी दिन से नया वर्ष आरम्भ होता है ।

जब सम्पूर्ण जगत् उत्पन्न हुआ था, तब चारों ओर हरे भरे एवं पुष्पित वृक्ष-वनस्पति आदि, विविध पक्षियों के मनोरञ्जक ध्वनियाँ और

प्रकाशमान सूर्यादि नक्षत्रों से देदीप्यमान आकाश इत्यादि से, आकर्षक तथा आह्लादजनक विचित्र स्थितियाँ थीं। उस समय उत्पन्न मानव किस प्रकार की आनन्दानुभूति प्राप्त किये होंगे? कल्पना करके देखें। उस प्रकार के मानव एवं सृष्टि के जन्म दिन का स्मरण करना ही नया संवत्सर है। उसी दिन से सृष्टि का नया दिन आरम्भ होता है।

यह सृष्टि उत्पन्न होकर अभी तक (२०७१ विक्रम संवत्, मार्च-२०१४ तक) १,९७,२९,४९,११५ वर्ष बीत गये। इस परिगणना में कुछ लोगों को सन्देह होता है कि इतने सुदीर्घ कालगणना को मानवों ने कैसे याद रखा है? इसका समाधान अत्यन्त सरल है। प्रत्येक व्यक्ति जिस प्रकार अपने जन्म दिन और अवस्था (Age) को बार-बार स्मरण करते हुए, दूसरों को बताते हुए याद रखता है, उसी प्रकार सृष्टि का काल भी याद रखा गया है। वैदिक संस्कृति एवं भारतीय परम्परा में हमारे प्राचीन ऋषि-मुनियों ने कुछ अद्‌भुत पद्धतियों को इस समाज में प्रवेश कराया है। तद्यथा– कोई भी व्यक्ति गुरुओं को, विद्वानों को वा अन्य पूज्यों को अभिवादन करते समय अपने गोत्र, वंश, पिता आदि का नाम उच्चारण करते हुए अपनी विद्यापरम्परा अर्थात् अपने वेद, शाखा, सूत्रादि को ज्ञापित करता था। यह परम्परा आज भी ब्राह्मणों में प्रचलित है। इससे गोत्रादि का विस्मरण नहीं होता। जो इस परम्परा को नहीं अपनाये, वे अपने गोत्र को भूलकर पर्वत, नदी, नगर, वृक्ष आदियों के नामों को या निरर्थक शब्दों को अपने गोत्र के रूप में चला रहे हैं। सम्प्रति आधुनिक प्रभाव से ब्रह्मण भी उस परम्परा को त्यागते जा रहे हैं, अस्तु। इसी प्रकार सृष्टि का काल विस्मृत न हो, इस उद्देश्य से हमारे ऋषि-मुनियों ने प्रतिदिन किये जाने वाले संध्या, यज्ञ, पर्वयज्ञादियों को प्रारम्भ करने से पूर्व संकल्प पाठ करने की परम्परा को प्रचलित कराया। इस संकल्प में यजमान या पुरोहित सृष्टि के आरम्भ से लेकर यज्ञानुष्ठान के समय तक के सम्पूर्ण काल की गणना संस्कृतभाषा में करते हैं, साथ में ब्रह्माण्ड से लेकर यज्ञानुष्ठान के स्थल तक अर्थात्



ब्रह्माण्ड, भूलोक, द्वीप, देश, प्रदेश, पर्वत वा नदियों के प्रान्तों का नाम, नगर, ग्राम, घर, स्थान आदि का भी उल्लेख करता है। तत्पश्चात् अपने मनोगत शुभकामनाओं को अभिव्यक्त करता है। यही संकल्प है। यह परम्परा आज भी धार्मिक कृत्यों में सुरक्षित चल रही है। इस प्रकार की परम्पराएँ भारतदेश को छोड़कर अन्यत्र मिलना असम्भव है। इस प्रकार की परम्परा से आगत वा ज्ञात सृष्टिकाल को आधुनिक वैज्ञानिक भी स्वीकार कर रहे हैं।

इस नववर्ष (चैत्र शुक्ल प्रतिपदा) तक सृष्टि में सर्वत्र हमें नूतनत्व दिखाई देता है। वृक्ष, वनस्पति आदियों में पत्ते झड़कर नये-नये पत्ते, फूल, फल आदि विकसित होकर हरितमय मनोरम दृश्य दिखाई देता है। ऐसे वातावरण में मोर भी विकसित पंखों से नृत्य करने लगते हैं। वसन्त ऋतु में अर्थात् चैत्र-वैशाख मासों में मधुमक्खियां भी छत्तों में शहद को भरकर रखती हैं। इसीलिए इन मासों के नाम वैदिक काल में मधु-माधव प्रसिद्ध हुए। इस वसन्त ऋतु के आरम्भ होते ही कोयल भी अपने मधुर ध्वनियों से लोगों को आकर्षित करती हैं और नववर्ष का स्वागत करती हैं। कोयल के इस मनोरञ्जक ध्वनियों को उद्दिष्ट कर किसी कवि ने कहा कि –

**काकः कृष्णः पिकः कृष्णः को भेदः पिककाकयोः।**
**वसन्तकाले सम्प्राप्ते काकः काकः पिकः पिकः ॥**

देखने में कौवा और कोयल दोनों ही काले दीखते हैं, दोनों में कोई भेद नहीं है। पर वसंत ऋतु का आगमन होते ही अपने-अपने स्वरों से कौवा कौवे के रूप में और कोयल कोयल के रूप में पहचाने जाते हैं।

वसंत ऋतु प्रविष्ट होते ही सभी प्राणियों में भी नूतनशक्ति सञ्चित होती है। वर्षाकाल और शीतकाल के बीच में शरद् ऋतु आती है, वह एक सन्धिकाल है। इस ऋतु सन्धि में अर्थात् भाद्रपद, आश्वयुज मासों में मनुष्यों को विविध व्याधियाँ एवं रोगों का संक्रमण होता है। विशेषकर निर्बल व्यक्तियों पर अधिक दुष्प्रभाव पड़ता है। इसी ऋतुसंन्धि में अधिकांश लोग

मृत्यु के ग्रास बनते हैं। इसलिए व्याधियों का शिकार न होता हुआ जो शरद् ऋतु को बिताता है, वह अपने आपको बड़े सौभाग्यशाली मानता है और मृत्यु को जीतने जैसा प्रसन्न होता है। अत एव सभी मनुष्य वेदमन्त्रों के माध्यम से भगवान् से प्रार्थना करते हैं कि – हे ईश्वर! हम शरद् ऋतु में पूर्ण स्वस्थ रहें– **''पश्येम शरदः शतम्, जीवेम शरदः शतम् ,श्रृणुयाम शरदः शतम्''.....**(यजु०३६.२४)। इस मन्त्र का भाव यह है कि हमारे सभी इन्द्रिय एवं शरीर सौ शरद् ऋतुओं तक पूर्ण स्वस्थ तथा बलशाली हों, सुखयुक्त हों और हम सौ शरद् ऋतुओं से भी अधिक जीने वाले हों। महर्षि दयानन्द ने भी लिखा है कि- ''हे मनुष्यों! जो शरद् ऋतु में उपयोगी पदार्थ हैं, उनको यथायोग्य शुद्ध करके सेवन करो''(यजु०१४.१६)। ''जो लोग अच्छे पथ्य करने हारे शरद् ऋतु में रोगरहित होते हैं, वे लक्ष्मी (ऐश्वर्य) को प्राप्त होते हैं'' (यजु०२१.२६)।

कठोपनिषद् में भी हम देखते हैं — जब नचिकेता तीसरे वर के रूप में मृत्यु का रहस्य पूछते हैं, तब यमाचार्य अनेक प्रलोभनों को दिखाते हुए कहते हैं कि– **''स्वयं च जीव शरदो यावदिच्छसि.... नचिकेतो! मरणं मानुप्राक्षीः''**(कठो०१.१.२३,२५)

हे नचिकेत! तुम जितने शरद् ऋतुओं तक जीना चाहते हो, उतने शरद् ऋतुओं तक जीवित रहने हेतु दीर्घ जीवन को माँगो, पर मृत्यु के रहस्य को मत पूछो। इसी प्रकार वैदिक वाङमय में अनेकत्र शरद् ऋतु एक भयावह के रूप में दीखता है। पर इस प्रकार का मृत्युभय या अस्वस्थता का भय वसन्त ऋतु की सन्धि में अर्थात् फाल्गुन-चैत्र मासों की सन्धिवेला में नहीं दीखता। बल्कि इसके विपरीत वसन्त के आरम्भ से सभी के शरीर में नूतन चैतन्य प्रसन्नता आदि ही दीखती हैं।

वसन्त ऋतु के आरम्भ होते ही वातावरण, आकाशादि अत्यन्त निर्मल होते हैं एवं अपरिमित आह्लादकर होते हैं। इस ऋतु में सूर्य भूमध्य रेखा पर पहुँचता है। इससे वातावरण में समान शीतोष्ण होते हैं, भूमण्डल



पर सभी मनुष्यों को सूर्य का दर्शन होता है। दिन-रात समान होते हैं। इस प्रकार सम्पूर्ण प्रकृति में नूतनत्व दिखाई देता है। इसी नूतनत्व का अनुकरण करते हुए प्राचीन काल में सभी मनुष्य इस दिन को संवत्सर के आदि दिन के रूप में, एक पर्व के रूप में मनाया करते थे। वह परम्परा आन्ध्रप्रदेश एवं तेलंगाणा में 'युगादि'(=युग का आदि दिन) के रूप में, जम्मु-कश्मीर में 'नवरेह' के रूप में, महाराष्ट्र में 'गुडिपड्वा' के रूप में, असम में 'रोंगली' के रूप में, केरल में 'विशुदिन' के रूप में मनाते हैं। इस प्रकार विभिन्न प्रान्तों में भिन्न-भिन्न नामों से उस पर्व को मनाते हुए आ रहें हैं। इतना ही नहीं ईरान, ईराक देशों में भी 'नौरोज' (नया दिन, संवत्सर का आद्य दिन) के रूप में वहां के लोग नयावर्ष मनाते हैं। इस प्रकार वसन्त ऋतु प्रारम्भ होने के दिन अर्थात् चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के दिन नये वर्ष (संवत्सरादि) को मनाना सर्वमान्य ही नहीं अपितु प्रकृति, सूर्य-चन्द्रादि की स्थितियों के अनुकूल है, वैज्ञानिक है एवं युक्तियुक्त है।

वेदादि में भी वसन्त ऋतु से ही संवत्सर (कालगणना) आरम्भ होने का उपदेश है- **''मधुश्च माधवश्च वासन्तिकावृतू शुक्रश्च शुचिश्च ग्रैष्मावृतू नभश्च नभस्यश्च वार्षिकावृतू इषश्चोर्जश्च शारादावृतू सहश्च सहस्यश्च हैमन्तिकावृतू तपश्च तपस्यश्च शैशिरावृतू** (तैत्तिरीयसंहिता ४.४.११.१, १.४.१४, अपि च द्र०यजु०१३.२५;१४.६,१५,१६,२७; १५.५७)।'' यहां स्पष्टरूप से वसन्तादि छः ऋतुओं का वर्णन है और प्रत्येक ऋतु दो-दो मासों में विभाजित हैं। स्पष्ट है कि वर्ष वसंत ऋतु से व मधु मास से आरम्भ होता है। यहाँ यह भी स्मर्तव्य है कि सृष्टि के आदि में प्रादुर्भूत वेदों में ही बारह मास एवं छः ऋतुओं का वर्णन है। पाश्चात्यों के समान दस मासों से बारह मासों का विकास नहीं हुआ।

वैदिक काल के मधु,माधव आदि जो मासों के नाम हैं, वे कालान्तर में नक्षत्रों के नामों से प्रसिद्ध हुए हैं। इन नाक्षत्रिक नामों के विषय में महर्षि पाणिनि ने स्वविरचित अष्टाध्यायी में वर्णन किया कि–

**''सास्मिन् पौर्णमासीति''**(४.२.२०) अर्थात् पूर्णिमा के दिन चन्द्रमा जिस नक्षत्र से युक्त होगा उसी नक्षत्र के नाम से मास का नाम होगा। तद्यथा-पूर्णिमा के दिन चन्द्रमा चित्रा नक्षत्र से युक्त होने पर उस मास का नाम चैत्र होता है। विशाखा नक्षत्र से युक्त होने पर मास का नाम वैशाख होता है। वैसे ही ज्येष्ठ नक्षत्र से ज्येष्ठ मास, (उत्तर) आषाढा नक्षत्र से आषाढ मास, श्रवण नक्षत्र से श्रावण मास, (उत्तर) भाद्रपद नक्षत्र से भाद्रपद मास, अश्विनी नक्षत्र से आश्विन (आश्वयुज) मास, कृत्तिका नक्षत्र से कार्त्तिक मास, मृगशिरा नक्षत्र से मार्गशीर्ष मास, पुष्य नक्षत्र से पौष मास, मघा नक्षत्र से माघ मास, फाल्गुन नक्षत्र से फाल्गुन मास का नामकरण होता है। इस प्रकार मासों के नामों से ही आकाशस्थ ग्रह-नक्षत्रों की स्थिति का बोध होता है। यह हमारे पूर्वजों के खगोलशास्त्रीय ज्ञान का परिचायक है।

मासों के वैदिक नाम और इस समय प्रचलित नाक्षत्रिक नामों को ऋतुओं के साथ इस प्रकार जानें–

| **वैदिक नाम** | **नाक्षत्रिक नाम** | **ऋतु** | **अयन** |
|---|---|---|---|
| मधु,माधव | चैत्र,वैशाख | वसन्त | उत्तरायण |
| शुक्र,शुचि | ज्येष्ठ,आषाढ | ग्रीष्म | उत्तरायण |
| नभस्,नभस्य | श्रावण,भाद्रपद | वर्षा | दक्षिणायन |
| इष,ऊर्ज | आश्विन,कार्तिक | शरद् | दक्षिणायन |
| सहस्,सहस्य | मार्गशीर्ष,पौष | हेमन्त | दक्षिणायण |
| तपस्,तपस्य | माघ, फाल्गुन | शिशिर | उत्तरायण |

इस प्रकार संवत्सर को मास एवं ऋतुओं में विभक्त किया जाता है- **''द्वे रूपे संवत्सरस्य मासा अन्यद् ऋतवो''**(काठक सं०३४.७)। ऋतुओं का क्रम वसन्त से ही आरम्भ होता है ऐसा स्पष्ट वर्णन वैदिक वाङ्मय में अनेकत्र उपलब्ध होता है। यथा- **''मुखं वा एतदृतूनां यद् वसन्तः''** (तैत्तिरीय ब्राह्मण-१.१.२.६,७) ऋतुओं में वसन्त मुख सदृश है, प्रथम स्थानीय



है[1]। अतः वसन्त ऋतु के आरम्भ से अर्थात् चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के दिन ही नया वर्ष मानना वेदादि शास्त्रों और भारतीय परम्परा से अनुमोदित है। हम सब अंग्रेजी कैलेण्डर के दास वा अभ्यस्त होने पर भी विवाह, जन्मदिन, अक्षराभ्यास, गृहप्रवेश, व्यापारादि शुभ कार्यों को आरम्भ करते समय भारतीय पंचांग का ही आश्रय लेते हैं, अंग्रेजी कैलेण्डर का नहीं। यही है भारतीय संस्कृति का अमरत्व।

सूर्य और भूमि के बीच में जब चन्द्रमा आ जाता है, तब ये तीनों एक ही रेखा पर रहते हैं। इसी स्थिति को अमावास्या कहते हैं। चन्द्रमा की गति अधिक होने के कारण वह सूर्य की अपेक्षा से आगे चला जाता है। इस प्रकार सूर्य-चन्द्रमाओं के बीच में १२° अंशो (डिग्रियों) की दूरी का अन्तर पड़ जाता है। वही अन्तर एक तिथि (दिन) कहलाता है। इस प्रकार उनकी बीच की दूरी १२°,२४°,३६°,.....अंश बढ़ते-बढ़ते पुनः एक रेखा पर आने के लिए अर्थात् उनका एक वृत्त पूरा होने के लिए (३६०°÷१२°=) ३०तिथियाँ (दिन) बनतीं हैं, अर्थात् एक मास पूरा हो जाता है[2]। इस प्रकार एक अमावास्या से दूसरी अमावास्या तक एक मास (३०दिन) पूरा हो जाता है[3]। वेदमन्त्र के माध्यम से यह वर्णन किया जा चुका है कि एक वर्ष में बारह मास होते हैं। अर्थात् एक वर्ष में (१२मास×३०दिन) ३६० दिन होते हैं। इसका भी वर्णन वेदमन्त्रों में है। यथा- **''ये त्रिषप्ताः परियन्ति विश्वा रूपाणि बिभ्रतः...''**(अथर्व०१.१.१)। यहाँ 'त्रिषप्ताः' शब्द का अर्थ इस प्रकार है–

---

**१. अन्यत्र द्रष्टव्य स्थल- ताण्ड्यमहा ब्रा० ५,९.११, कौषीतकी ब्रा०५.१, शांखायन ब्रा० १९.३ आदि**

**२. यह वर्णन मास के अमान्त पक्ष का है, उसी प्रकार पूर्णिमान्त पक्ष को भी समझा जा सकता है।**

**३. षष्टिर्मासस्याहोरात्राणि (शतपथ०६.२.२.३५) एक मास में साठ दिन-रात होते हैं अर्थात् तीस दिन होते हैं।**

१. तीन से सात तक की विषमसंख्याओं का योग- ३+५+७=१५
२. तीन बार सात ३×७=२१(+)
३६
३. तीन और सात का योग ३+७=१०(×)
३६×१०=३६०

इस प्रकार सृष्ट्यादि में ही वेद ने बताया कि एक वर्ष में ३६० दिन होते हैं। और एक मन्त्र को देखें–

**द्वादश प्रधयश्चक्रमेकं त्रीणि नभ्यानि क उ तच्चिकेत ।**
**तस्मिन्त्साकं त्रिशता न शंकवोऽर्पिताः षष्टिर्न चलाचलासः।।**
(ऋ०१.१६४.४८)

संवत्सर रूपी कालचक्र में बारह मास रूपी परिधियाँ, तीन प्रमुख (ग्रीष्म,वर्षा,शरद्) ऋतुरूपी नाभियाँ और ३६० दिन रूपी आरें होते हैं, जो कि अत्यन्त चलायमान हैं।

इसी प्रकार ब्राह्मण ग्रन्थों में भी संवत्सर में ३६० दिन होने का स्पष्ट वर्णन है– **त्रीणि च ह वै शतानि षष्टिश्च संवत्सरस्याहोरात्राणि** (गोपथ ब्रा०१.१.५.५)।

शास्त्रों में काल की परिगणना मानवीय एवं ब्राह्म वर्षों में की जाती है। ब्राह्मवर्ष के विषय में यहाँ संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत कर रहे हैं। इस सृष्टि की स्थिति एवं प्रलय के काल को मिलाकर एक ब्राह्मदिवस कहते हैं। इसका परिमाण मानवीय गणना में ४,३२,००,००,००० वर्ष रहता है। ऐसे तीस दिनों का एक ब्राह्ममास होता है। बारह ब्राह्ममासों का एक ब्राह्मवर्ष होता है। ऐसे सौ ब्राह्मवर्षों को मिलाकर उसे परान्त काल कहते हैं। एक ब्राह्मवर्ष में (१२×३०=३६०) तीन सौ साठ ब्राह्मदिन रहते हैं। परान्तकाल में (३६०×१००=३६,०००) छत्तीस हजार ब्राह्मदिन रहते हैं। इसे ही महर्षि दयानन्द ने मोक्षकाल माना है। मुक्तात्मा परान्तकाल तक



अर्थात् छत्तीस हजार बार इस सृष्टि की उत्पत्ति एवं प्रलय होने तक परमात्मा के आनन्द का अनुभव कर पुनः जन्म लेता है, अस्तु। यहाँ विशेषतः ध्यातव्य है कि ब्राह्मवर्ष में भी ३६० ही दिन होते हैं, ऐसा हमारे शास्त्र एवं ऋषि-मुनियों ने स्वीकारा है।

भारतीय गणितपद्धति में कालगणना दो प्रकार से की जाती है– १. सौरमान, २.चान्द्रमान। चन्द्रमा का भूमि के चारों ओर परिक्रमा करने के लिए २९.५ दिन लगते हैं। यह चान्द्रमान कहलाता है। बारह चान्द्रमासों का एक चान्द्रवर्ष होता है, जिसमें २९.५×१२=३५४ दिन होते हैं। पर सौरमान के अनुसार भूमि को सूर्य के चारों ओर परिक्रमण करने के लिए ३६५.२५ दिन अपेक्षित हैं। इस प्रकार चान्द्रवर्ष एवं सौरवर्ष में ११.२५ दिनों का अन्तर होता है। इस अन्तर को प्रत्येक ३२ मासों के बाद चान्द्रवर्ष को १३ मासों का मानकर किया जाता है। इसी तेरहवें मास को अधिकमास, अधिमास, मलमास आदि कहते हैं। इस प्रकार वर्ष में १२ मास या कभी-कभी १३ मास होते हैं। इसका भी स्पष्ट उल्लेख हमारे ऋषि-मुनियों ने किया– **''द्वादश वा वै त्रयोदश वा संवत्सरस्य मासाः''** (शतपथ० २.२.३.२७)। चन्द्रमा से मास बनने के कारण उसे **''मासकृत्''** (ऋ०१.१०५.१८) कहते हैं।

इसप्रकार भारतीय कालगणना सूर्य चन्द्रादियों पर आश्रित है। हमारा कालान्तर (कैलेण्डर) खगोलविज्ञान से सम्बन्धित है। प्राकृतिक घटनाओं से सम्बन्ध रखने वाला परिज्ञान कभी भी असत्य नहीं हो सकता। जैसे कि– सूर्यग्रहण सदा अमावास्या के दिन ही होता है, चन्द्रग्रहण पूर्णिमा के दिन ही होता है। इस प्रकार देखें तो आधुनिक विज्ञान के विना प्राकृतिक विज्ञान को जानने वाला व्यक्ति कालान्तर (कैलेण्डर) के विना ही चन्द्रमा को देखकर मास, शुक्लपक्ष, कृष्णपक्ष, पूर्णिमा,अमावास्या,अष्टमी आदि तिथियों को जानलेता है। पर आधुनिक विज्ञान को जानने वाला कैलेण्डर के विना कुछ भी नहीं जान सकता।

अभी तक हमने प्रमाण एवं युक्तियों से जान लिया कि चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के दिन नये वर्ष को मनाना ही युक्तियुक्त है । अब इस वर्ष की विशेषताओं का वर्णन किया जाता है–

१. **चैत्रे मासि जगद् ब्रह्म ससर्ज प्रथमेऽहनि ।**
**शुक्लपक्षे समग्रे तु सदा सूर्योदये सति ॥** (हेमाद्रि)

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के प्रथम सूर्योदय तक परमेश्वर ने सम्पूर्ण सृष्टि का निर्माण कर मानवों को उत्पन्न किया था । अत एव इसे सृष्टिसंवत्सर और मानव संवत्सर कहते हैं ।

२. इसी दिन मनावों के कल्याण निमित्त परमात्मा ने अग्नि, वायु, आदित्य, अंगिरा नाम के चार ऋषियों के अन्तःकरण में वेदज्ञान प्रकाशित किया । इसलिए इसे वेदसंवत्सर भी कहते हैं ।

३. इसीदिन कलियुग संवत्सर आरम्भ होता है ।

४. इसी दिन पाण्डुपुत्र युधिष्ठिर का राज्याभिषेक हुआ था । इसीलिए युधिष्ठिर संवत्सर भी इसी दिन आरम्भ होता है ।

५. अत्यन्त पराक्रमी, धर्मात्मा और न्यायप्रिय विक्रमादित्य के नाम से प्रसिद्ध संवत्सर भी इसी दिन आरम्भ होता है ।

६. शालिवाहन ने हुणों को पराजित कर दक्षिण भारत में एक अच्छा धार्मिक राज्य स्थापित किया था । तब से शालिवाहन शक संवत् भी आरम्भ हुआ था । यह संवत्सर भी इसी दिन आरम्भ होता है ।

७. महर्षि दयानन्द ने वैदिक धर्म एवं प्राचीन संस्कृति की रक्षा के लिए और मानव समाज की उन्नति के लिए इसी दिन आर्यसमाज की स्थापना की थी ।

८. इस नये वर्ष के समीप में ही अर्थात् चैत्र शुक्ल नवमी के दिन मर्यादापुरुषोत्तम श्रीराम का राज्याभिषेक हुआ था ।



# नये वर्ष के दिव्य सन्देश

इस नये वर्ष के दिव्य सन्देशों को ग्रहण कर उनसे प्रेरित होकर हम इस पर्व को महदानन्द से मनाने के लिए इस प्रकार प्रयास करें–

१. यह सृष्टि का उत्पत्ति का दिन है । उत्पत्ति के समय यह जिस प्रकार अत्यन्त निर्मल, शुद्ध-पवित्र, सभी प्राणियों के लिए स्वास्थ्यदायक एवं मनोहर था, उसी प्रकार बनाये रखने के लिए, सुरक्षित रखने के लिए हम सब कटि बद्ध हों। वातावरण के प्रदूषण को समाप्त करने हेतु वृक्षादियों की रक्षा करते हुए उनकी वृद्धि करें तथा प्रतिदिन यज्ञ-यागों का अनुष्ठान करें ।

२. यह मानव संवत्सर है । सभी मनुष्य एक भगवान् की संतानें हैं । इसलिए हम सब जाति, मत, देश लिंगादि भेदों को भुलाकर एवं ईर्ष्या, द्वेष, असूयादि दोषों को त्यागकर परस्पर अत्यन्त प्रीति, प्रेम, अनुरागादियों से मिलजुलकर रहें और अपनी मानवता को प्रदर्शित करें । **''वसुधैव कुटुम्बकम्''** सम्पूर्ण जगत् ही एक परिवार है इस पवित्र भावना से वर्तें ।

३. यह वेदोत्पत्ति का संवत्सर है । वैदिक धर्म तथा वैदिक संस्कृति भूमण्डल पर जब तक परिव्याप्त थी, तब तक सभी मनुष्य सर्वविध सुख-शान्तियों से पूर्ण सन्तृप्त थे । अतः हम आज भी विभिन्न समयों में स्वार्थवश स्थापित व प्रचलित साम्प्रदायिक सिद्धान्तों एवं विभेदों को त्यागकर भगवत्प्रदत्त दिव्य वेदज्ञान को प्राप्तकर, उसका अनुसरण कर ऋषि-मुनियों के समान और श्रीराम, श्रीकृष्ण जैसे महापुरुषों के समान सुख-शान्तियों को प्राप्त कर सकते हैं । जिससे एक दिव्यमानवसमाज का निर्माण होगा ।

४. यह श्रीराम, युधिष्ठिर, विक्रमादित्य, शालिवाहन जैसे धर्मपारायण महाराजों के धर्मराज्य की स्थापनादिवस है । अतः हम सब अधर्म, अन्याय, अत्याचार, अनाचार, दुराचार, भ्रष्टाचार, अविनीति जैसी

नीच भावनाओं से सन्तप्त राजनीति को भस्मकर, धर्मराज्य की स्थापना के लिए आगे बढ़ें एवं दृढ़ संकल्प लें । **''धर्मो रक्षति रक्षितः''**(गीता) यदि हम धर्म की रक्षा करते हैं, तो धर्म हमारी रक्षा करता है ।**''यतो धर्मस्ततो जयः''**(गीता) जहाँ धर्म है, वहीं विजय और सुख-शान्तियाँ होती हैं ।

५. यह आर्यसमाज का स्थापना दिवस है। आर्य का अर्थ है श्रेष्ठ, समाज का अर्थ मानवता युक्त मनुष्यों का समुदाय। आर्यसमाज का अर्थ है कि उत्तमोत्तम, श्रेष्ठ मनुष्यों का समाज । **''कृण्वन्तो विश्वमार्यम्''** (ऋ०९.६३.५) इस विश्व में व्याप्त अज्ञान-अन्धकार एवं दुष्टशक्तियों का विनाश कर पूरे विश्व को आर्य बनावें, एक दिव्य मनुष्यों के समाज का निर्माण करें। स्वार्थ, अज्ञान, भूत-प्रेत, यन्त्र-तन्त्र, अन्धविश्वास आदियों को समूल नष्ट कर सभी मनुष्यों को ज्ञानी व विवेकी बनावें ।

## संवत्सरों के नाम

''प्रभवो विभवः शुक्लः प्रमोदोऽथ प्रजापतिः ।
अंगिराः श्रीमुखो भावो युवा धातेश्वरस्तथा ।।
बहुधान्यः प्रमाथी च विक्रमोऽथ वृषस्तथा ।
चित्रभानुः सुभानुश्च तारणः पार्थिवो व्ययः ।।
सर्वजित्सर्वधारी च विरोधी विकृतिः खरः ।
नन्दनो विजयश्चैव जयो मन्मथ-दुर्मुखौ ।।
हेमलम्बी विलम्बी च विकारी शार्वरीप्लवः ।
शुभकृच्छोभनः क्रोधी विश्वावसुपराभवौ ।।
प्लवंगः कीलकः सौम्यः साधारणविरोधकृत् ।
परिधावी प्रमाथी च आनन्दो राक्षसोऽनलः ।।
पिङ्गलः कालयुक्तश्च सिद्धार्थो रौद्र-दुर्मती ।
दुन्दुभी रुधिरोद्गारी रक्ताक्षी क्रोधनः क्षयः।।''



१. प्रभव
२. विभव
३. शुक्ल
४. प्रमोद
५. प्रजापति
६. अंगिरा
७. श्रीमुख
८. भाव
९. युवा
१०. धाता
११. ईश्वर
१२. बहुधान्य
१३. प्रमाथी
१४. विक्रम
१५. वृष
१६. चित्रभानु
१७. सुभानु
१८. तारण
१९. पार्थिव
२०. व्यय
२१. सर्वजित्
२२. सर्वधारी
२३. विरोधी
२४. विकृति
२५. खर
२६. नन्दन
२७. विजय
२८. जय
२९. मन्मथ
३०. दुर्मुख
३१. हेमलम्बी
३२. विलम्बी
३३. विकारी
३४. शार्वरी
३५. प्लव
३६. शुभकृत्
३७. शोभन
३८. क्रोधी
३९. विश्वावसु
४०. पराभव
४१. प्लवंग
४२. कीलक
४३. सौम्य
४४. साधारण
४५. विरोधकृत्
४६. परिधावी
४७. प्रमाथी
४८. आनन्द
४९. राक्षस
५०. अनल (नल)
५१. पिंगल
५२. कालयुक्त
५३. सिद्धार्थ
५४. रौद्र
५५. दुर्मति
५६. दुंदुभि
५७. रुधिरोद्गारी
५८. रक्ताक्षी
५९. क्रोधन
६०. क्षय

# प्रसिद्ध संवत्सर

## १. भारतीय संवत्सर

| | | |
|---|---|---|
| १. सृष्टि-संवत् | .......... | १,९७,२९,४९,११५ |
| २. श्रीराम-संवत् | .......... | १,२५,६९,११५ |
| ३. श्रीकृष्ण-संवत् | .......... | ५,२४० |
| ४. युधिष्ठिर/कलियुग संवत् | .......... | ५,११५ |
| ५. बौद्ध संवत् | .......... | २,५८९ |
| ६. महावीर (जैन) संवत् | .......... | २,५४१ |
| ७. श्रीशंकराचार्य संवत् | .......... | २,२९४ |
| ८. विक्रम संवत् | .......... | २,०७१ |
| ९. शालिवाहन(शक)संवत् | .......... | १,९३६ |
| १०. कलचुरी संवत् | .......... | १,७६६ |
| ११. वलभी संवत् | .......... | १,६९४ |
| १२. फसली संवत् | .......... | १,४२५ |
| १३. बँगला संवत् | .......... | १,४२१ |
| १४. हर्षाब्द | .......... | १,४०७ |
| १५. दयानन्दाब्द | .......... | १९१ |

## २. विदेशीय संवत्सर

| | | |
|---|---|---|
| १. चीनी संवत् | .......... | ९,६०,०२,३१२ |
| २. खताई संवत् | .......... | ८,८८,३८,३८५ |
| ३. पारसी संवत् | .......... | १,८९,९८२ |
| ४. मिस्त्री संवत् | .......... | २७,६६८ |
| ५. तुर्की संवत् | .......... | ७,६२१ |
| ६. आदम संवत् | .......... | ७,३६६ |
| ७. ईरानी संवत् | .......... | ६,०१९ |
| ८. यहूदी संवत् | .......... | ५,७७५ |
| ९. इब्राहीम संवत् | .......... | ४,४५४ |
| १०. मूसा संवत् | .......... | ३,७१८ |
| ११. यूनानी संवत् | .......... | ३,५८७ |
| १२. रोमन संवत् | .......... | २,७६५ |
| १३. ब्रह्मा संवत् | .......... | २,५५५ |
| १४. मलयकेतु संवत् | .......... | २,३२६ |
| १५. पार्थियन संवत् | .......... | २,२६१ |
| १६. ईस्वी (ईसा) संवत् | .......... | २,०१४ |
| १७. जावा संवत् | .......... | १,९४० |
| १८. हिजरी संवत् | .......... | १,३८४ |



# राशि और ऋतुओं का काल

| राशि | ऋतु | अंग्रेजी मास | अंग्रेजी ऋतु |
|---|---|---|---|
| मीन-मेष<br>वृषभ-मिथुन | वसन्त<br>ग्रीष्म | फरवरी-मार्च<br>अप्रैल-मई | ग्रीष्म |
| कर्क-सिंह<br>कन्या-तुला | वर्षा<br>शरद् | जून-जुलाई<br>अगस्त-सितम्बर | वर्षा |
| वृश्चिक-धनु<br>मकर-कुम्भ | हेमन्त<br>शिशिर | अक्टूबर-नवम्बर<br>दिसम्बर-जनवरी | शीत |